भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2023-2025

विशेषांक

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 8 | अंक 18 | उदयपुर शनिवार 23 सितम्बर 2023 | पेज 4 | मूल्य 5 रू.

पूरवजों की स्मृति में पूजा-अनुष्ठान के संस्कार

मेरी माताजी के कुल आठ संतानें हुईं। उन्होंने बताया कि सबसे बड़ी सोवन। फिर एक लड़का हुआ जिसका नाम भमरू (भंवरलाल) रखा गया। ये सात वर्ष ही जी सके। ये ही हमारे घर में एकमात्र पूरवज बने हैं। उसके बाद एक सवाया (सवाईलाल) हुए जो चार माह से अधिक जीवित नहीं रहे। एक लड़के का डेढ़ साल की उम्र में निधन हो गया। उसका नाम भी सवाई ही था। एक गर्भावस्था में ही चल बसा। कहते हैं जब माताजी ढूंढ़े में शौच के लिए गई तब वहां गडूरे को भगाने के लिए पत्थर फैंका। इस समय अधिक झुकने के कारण गर्भस्थ शिशु की जीवनीशक्ति जाती रही। इसके बाद नाथू (नरेन्द्र), मैं मिट्ठू (महेन्द्र) और बहिन सोबाक (सुधा) हुई।

जाहिर है, चार की मृत्यु के बाद जब पांचवीं संतान ने लड़के के रूप में जन्म लिया तो रंग-रूप में बहुत सुन्दर होने के कारण कहीं नजर नहीं लग जाए अत: उसे बहुत छिपा-छिपा कर अछन-अछन रखा गया। कहने को यही कहा कि लड़की हुई है। देवी अम्बामाता की बोलमा बोली गई। वह बालक को दीर्घजीवी तथा स्वस्थ रखे इसके लिए उदयपुर की अम्बामाता धाम से नारियल भेजकर चांदी की बनी नाक में पहनने की नथ मंगवाई गई और 'नाथू' नाम रखा गया। कुछ समय पश्चात पूरा परिवार तेरापंथी महाराज के दरसण करने गया। महाराज ने नवजात शिशु की नाक में नथ देखकर कहा- 'यह नथमल है क्या?' मां बोली- 'बावजी, कहीं पूछा नहीं है। आपने कहा है तो यही नाम सही।'

मृत्यु के पश्चात जो प्राणी देव के रूप में घर-परिवार के किसी सदस्य के शरीर में उपस्थित होते हैं वे पूर्व पुरुष पूरवज कहलाते हैं। जीवित रहते अपने स्वभाव के अनुसार मरणोपरान्त उपस्थित हो उसी तरह का आचरण करते हैं। पूर्व काल में जैसा उनका वाणी-व्यवहार, जीवनाचरण, मनेच्छाजनित सरोकार, कर्मक्षेत्रीय प्रभावना तथा आकस्मिक घटना-प्रसंग का परिदृश्य रहा, उसका दरसाव भी किसी-न-किसी रूप-दर्शन में देखने को मिलता है।

ये पूर्वज पुरुष, महिला तथा छोटे बच्चे भी होते हैं। सात माह के गर्भावस्था में किसी की मृत्यु होने पर भी सात मास्या पूर्वज बनते हैं। प्रकट होने का ये कोई-न-कोई संकेत दे देते हैं। कभी स्वप्न के माध्यम से तो कभी कोई व्याधि या अनहोनी घटना के माध्यम से ये अच्छा-बुरा संकेत देते हैं। परिवारजन को इसका आभास हो जाता है। कभी नहीं होने पर, परेशानी बढ़ने पर अनुभवी लोग बता देते हैं। किसी देव-देवरे पूछताछ से भी पता कर लिया जाता है।

ऐसी स्थिति में विशेष संस्कारपूर्वक उनकी मनौती, मान-मनावण, सेवापूजा, अनुष्ठानमूलक रात्रिजागरण कर उनकी प्रतिष्ठा की जाती है तब समस्या का निदान हो परिवार में शान्ति-सुख का वातावरण प्रारम्भ हुआ लगता है। ऐसी मान्यता अनेक जातियों में है। उनमें अपने अलग रीति-नीतिगत संस्कार हैं जो बड़े दिलचस्प हैं।

नये बने पूर्वज को पहलीबार गृहप्रवेश दे बिठाने को उन्हें 'छाबणे बैठाना' कहा जाता है। ऐसी स्थिति में मुहूर्त के अनुसार जहां उन्हें बिठाना होता है उस स्थान की पूरी सफाई की जाती है। दूध-गोमूत्र की छींटा दिया जाता है। घर की पांच बहिन-बेटियां, बेनकुंवाइयों को नूता जाता है। सभी बड़ी प्रसन्नता के साथ तैयारी में लग जाते हैं।

इस दिन रात्रिजागरण किया जाता है। पूर्वज-देवता जिस खोल में हैं, उसके अनुसार, घरवालों की हैसियत के अनुसार चांदी अथवा सोने के पतरे पर मूरत बनवाई जाती है। इसके लिए सुनार को पहले से कह दिया जाता है। वहां से सूर्यास्त के बाद विधिपूर्वक महिलाएं जाकर

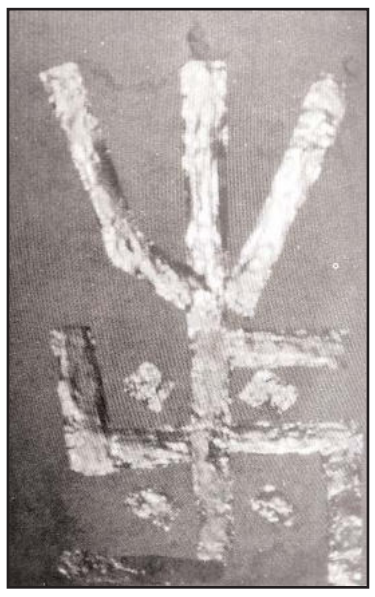

पूरवज सम्बन्धी गीत गाती विशेष संस्कार के साथ मूरत को लाती हैं। उनके साथ ढोली ढोल बजाता चलता है।

देवता या तो हवा अर्थात् पवन या फिर सर्प योनि में या फिर दोनों रूपों में होते हैं। पवन-रूप में होने पर मृतक के अनुसार पुरुष या फिर महिला आकार की तथा सर्प-रूप में होने पर सर्प का चिन्ह लिए मूरत बनवाई जाती है। एक थाल में पुरुष-मूरत सफेद तथा महिला-मूरत लाल सवा फीट समचौरस कपड़े में लाई जाती है जो 'ओछाड़' नाम से जाना जाता है। जागरण के बाद मूरत ओछाड़ सहित कंडिये में रख दी जाती है।

रात्रिजागरण महिलाओं के पूरवज सम्बन्धी गीतों से शुरू होता है। इस समय भी ढोल बजाया जाता है। गीत के दौरान पूरवज को कसार, लपसी, खीर आदि के साथ घी की लगातार धूपकार धूपखेता कंडे के अंगारे पर धूप खेता रहता है। एक-के-बाद-एक कर पांच गीत गाती महिलाएं पूरवज बावजी के पधारने का आग्रह करती रहती हैं।

पूरवज विषयक गीतों में पूरवज आने का निमंत्रण स्वीकार कर नदी पर नहाने गये हैं। अच्छी तरह कपड़े-लत्ते धो रहे हैं। नहाधोकर कपड़े सूखा रहे हैं। बालों में तेल लगा ठीक से सिणगार कर रहे हैं जैसे वर्णन बड़े ही मोहक तथा ममत्व के सूचक हैं। पूरवज के आने में देरी पर पुन: वे ही गीत दोहराये जाते हैं।

पूरवज का जिस पर ममत्व होता है उसे आने का संकेत देते हैं। यह संकेत उसे बार-बार उबासी आने, गुमसुम बैठे रहने याकि अपने होने का भान नहीं रहने के रूप में होता है। अन्त में गीत की शक्ति उन्हें प्रकट होने को विवश कर देती है। वे तब जोर की हाक दिये उपस्थित होते हैं। जिसके शरीर में आते हैं उसे 'घोड़ला' कहते हैं। वहां बैठे सभी 'पधारो बावजी' कहते उनका अभिवादन करते हैं। उनसे सवाल कर जवाब मांगते हैं।

इस बीच पूछताछ शुरू करने वाले अपनी समस्या का जिक्र कर उनसे समाधान चाहते हैं। वे पास में रखे गेहूं-मक्की के 'आखे' देते हैं। उनमें पांच, सात या नौ की संख्या होने पर कार्य सिद्ध होने, सफलता मिलने का संकेत समझा जाता है। यह संख्या 'एकी' होती है जो शुभ मानी जाती है। 'बेकी' वाली संख्या चार, छह, आठ ठीक नहीं, अशुभ मानी जाती है। कभीकभाक इन दोनों में आखे का कोई कण साबुत नहीं होकर टूटा हुआ होता है तो वह 'अर्‌या' कहलाता है जिसका अर्थ उलझन आना, कार्य सिद्धि में बाधा अर्थात् व्यवधान होने की सूचना होता है।

एक दिन मेरे निवास पर उदयपुर में लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ की गादी लगी। गादी पर सेवक श्री सरजुदासजी के शरीर में कल्लाजी बावजी का पधारना हुआ तब उन्होंने हमारे परिवार में एक सती होने की जानकारी दी। उन्होंने न केवल इसकी जानकारी ही दी बल्कि ऊपर एक कमरे में दीवार पर सिन्दूर मालीपन्ना का अंकन कर उनकी स्थापना भी कर दी। स्थापना का यह दिन वि. सं. 2039 ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्दशी गुरूवार (6 मई, 1982) का था।

इस समय मैं, पत्नी श्रीमती प्रीतम, दोनों पुत्रियां कविता, कहानी, दोनों पुत्र मुक्तक, तुक्तक एवं भाणजी उमराव तथा भाणजा जंवाई श्री रोशनलालजी बाबेल उपस्थित थे। तब से कल्लाजी बावजी के आदेशानुसार सुबह-शाम पूरवज के साथ उन सतीजी की भी दीवा-बाती की जा रही है।

इन्हीं के पास पूर्वज (भंवरलालजी) का कंडिया रखा हुआ है। इनकी सोने की पवन और सरप की मूरत है। ये पूर्वज माताजी के डील में आते। आते समय जोर की हाक लगाते और खूब ओतरते। जमीन पर जोर-जोर से दायां हाथ पटकते लेकिन इन्होंने सदा घर की सहायता ही करी। जीजां ने बताया कि बावजी जैसे हाके-धाके थे वैसे ही सोरे-धोरे थे।

एकबार माताजी ने इनकी आखड़ी ली। आखड़ी में गुड़ खाना वर्जित था। एक दिन डालचन्दजी नलवाया (जीजां के देवर) के विवाह में गुड़ के बने ढोकले खा लिए तब माताजी तीन दिन तक बड़ी बेचैन रही। उन्हें लगा कि उनके पूरे शरीर में सांप चढ़ रहा है। यकायक काकी (माणकचन्दजी की पत्नी देऊबाई) को याद आया कि गुड़ की आखड़ी ले रखी है और ढोकले खा लिये सो पूर्वज बावजी का ही यह करिश्मा है। इस पर तत्काल बावजी से क्षमा मांगी गई और देखते-देखते दर्द जाता रहा।

एक रात गर्मियों की छुट्टियों में कानोड़ रातिजगा दिया। बहुत देर तक गीत गाये गये। धूप-ध्यान किया किन्तु बावजी ने पधारने का कोई संकेत नहीं दिया। यह सोच माताजी के कहने पर मैं व भाई साहब चांदनी पर जाकर सो गये। पीछे से कमलास गीत गाया गया तब अचानक बावजी का पधारना हुआ। उन्होंने खूब गुस्सा किया। खूब पछाड़ खाई। जीजां से कहा कि तेरे क्या जल्दी थी। जीजां बोली- 'बावजी आधी रात हो गई। गीत गाते-गाते थक गईं।' वे बोले- 'घड़ी देख कहां बारह बजी है? मैं तो एक पगवराणा खड़ा हूं।' तब चांदनी पर सोये हमें भी बुलाया गया। सबने कहा, 'गलती हो गई सो माफ करो। इतना कोप मत करो। सबको राजी रखो। आप तो मोटा पुरुष हो।' तब जाकर शान्ति हुई।

एकबार मां जिन्हें हम सब 'बाई' कहते, जीजां के सिर से जुंए निकाल रही थी कि यकायक ऊपर से सांप उनकी गोदी में आ गिरा। माताजी ने जोर से हाथ का टल्ला दिया कि सांप देखते-देखते गायब हो गया। इसी तरह एक समय पिताजी घोड़े पर खणची रख रहे थे कि उसमें से सांप निकला। रात्रि को प्राय: हर दूसरे-तीसरे रोज सांप बोलता तब कहते- 'बावजी बोलो मत, डराओ मत।'

भाई साहब डॉ. नरेन्द्रजी कोई दो वर्ष के थे कि उनकी अचानक आंखें आ गईं। ये आंखें बड़ी डबडबी हो गईं। वे जिद्दी बन गये। जमीन पर सोये नहीं। घुटनों पर या गोद में ही रहते। ज्योंही नीचे सुलाते कि रोना शुरू। यह रोना भी साधारण नहीं, बसुके ताण-ताण कर रोते, ऐसे कि उनकी तरसना नहीं देखी जाती। सभी ने यही कहा कि यह कोई शारीरिक बीमारी नहीं है, देवता की रखी हुई बीमारी है। तब देवता की रात जगाने की, उन्हें छाबणे बिठाने की बोलमा बोली गई। इसके बाद ऐसी कभी कोई घटना नहीं घटी।

एकबार जयपुर में भाई साहब के निवास तिलकनगर वाले मकान की नांगल के अवसर पर रात जगाई। तब सोचा गया कि बावजी की एक ही मूरत है जो मेरे पास उदयपुर है अत: यहां के लिए एक अलग मूरत बनवा ली जाय। नांगल का यह अच्छा अवसर था। भाई साहब ने एक सोनार से यह मूरत बनवा ली।

रात्रि को रात जगाने का कार्यक्रम था। हम सब सगे-समधी वहां थे ही। महिलाओं ने दो-दो, तीन-तीन बार सारे गीत गा लिए किन्तु बावजी का पधारना नहीं हुआ। भाई साहब और मैंने भी उस रात खूब धूप ध्यान किया पर बावजी का आह्वान करने में असफल रहे। महिलाएं बात करती रहीं कि इस मौके पर तो बावजी को पधार कर दो टेपी सन्तोष की बात कहनी थी। जीजां बोली कि हमारे बावजी तो नखरे वाले नहीं हैं। इनकी तो हमारे पूरे परिवार पर सदा ही कृपा रही है। ऐसे भी मौके आये जब बिना बुलाये ही पधार गये। माताजी ने कहा- याद नहीं है क्या जब कानोड़ सोबाक और लाड़ी (भाभीजी) तालाब पर नहाने गये और लौट रहे थे तब रास्ते में भिश्तण मिली। घर आकर दोनों में कंपकंपी चढ़ आई तब तत्काल बावजी पधारे और कहा-'कोई फिक्र मत करना। मैं साथ था। भिश्तण की कुदृष्टि का कोई असर नहीं होगा।' और तब सबने सन्तोष की सांस ली। फिर उस डाकण नामी भिश्तण के सम्बन्ध में कई किस्से प्रारम्भ हो गये जिसने कानोड़ में कई महिलाओं का जीवन बर्बाद कर दिया था। उसके नाम से ही पूरा गांव थर्राता था। गांवों में डाकण, भूत, प्रेत, चुड़ैल का भय आज भी बुरी तरह व्याप्त है।

ऐसी बातें करते-करते रात्रि की एक बज गई। जीजां ने कहा- 'कमलास दो।' ऐसी मान्यता है कि रातिजगा के गीत चालू होते ही पूरवज देवता पधार जाते हैं और घर के बाहर एक पांव, अरवाणे पांव खड़े रहते हैं। कमलास देने पर ही अपने गंतव्य को लौटते हैं। जीजां के कहने पर, माताजी की सहमति से तब कमलास का यह गीत गाया गया-

लींबड़ी राणा राईजी रे देस
ओ फरी ने कटावो सीसोद्या लींबड़ी
लींबड़ी राणी मोरी नुं जाय,
जठे ओ जठे देवता रो वासो वसरयो
बदना री राणी बायर आवो,
थांणो ओ थांणो रूप बखाणे
माता सीस वागड़िया नारेळ
, चोटी ओ चोटी यो वासक वसरयो

अर्थात् - राणा राईजी के देश फैली नीमड़ी कटाओ। राणी नींबड़ी कटाई नहीं जा सकती। वहां देवता का निवास है। बदना की राणी बाहर आकर अपने रूप का बखान करो। माता का सीस वागड़िये नारियल जैसा, चोटी जैसे वासुकि नाग, ललवट (ललाट) पर चांद उदित, बालों की मींडियां जैसे कुंवासिया (उदित) चांद, आंख आम की डाल, भुंवारा (भांपन) भ्रमर भ्रमण करते, दांत दाड़िम के बीज, जीभ कमल की पंखुड़ी, कण्ठ कोयल की राग, हिवड़ा (हृदय) हंस जैसा, हाथ चंपे की डाल, अंगुलियां मूंफली जैसी, पेट पोयर (पतला) पान के पत्ते जैसा, कमर केर की कमड़ी, जांघ देवल (केल) का थंभा, पींड्यां बेलन, एड़ियां सठवा सूंठ, धड़ हंस के सांचे में सुनार ने तैयार किया है।

माता बोली- 'सेवग (सेवाकारी) मुझे सुनार ने नहीं रघुनाथ ने रूप दिया है और मेरी माता ने जन्म दिया।' सेवाकारी (गानेवाली) बोली, 'घोड़े पर पलाण डाल परिवार के मुखिये का नाम लेकर देवता को दूर तक पहुंचाओ। मोगरे मरवे के फूलों में वे निवास करें। सरवर (सरोवर) जाकर हाथ-मुंह धोओ।' देवता के रूप-सौंदर्य की ऐसी उपमाएं बड़ी ही अनुपम हैं जो महिलाओं की सौंदर्य-दृष्टि तथा नव्य-भव्य परिकल्पना का अन्यतम उदाहरण है।

देवता के प्रस्थान के बाद रात्रिजागरण की समाप्ति वाला कमलास गीत गाकर थोड़े रास्ते पानी का छींटा दिया जाता है। गीत है-

नानीसी तराई में नीर घणो ए मोरी सइयां
जठे ओ बाराओ पूरवज सांपड़े
सांपड्यां सूंपड्यां पूरवजां ने वीजो रे कमलास मोरी सइयां
तराई रो पाणी सइयां अंत घणो
नानीसी पिंगाणी (नारियल के ऊपर की खोल, काचली) में कंकू घणो ए....
नाना सा कंड्या मांय कपड़ा घणा ए....
पैर्‌या ओढ्या पूरवजां ने वीजो....
नाना सा डाबा में गेणला घणा ए....
नानी सी तोलड़ी (हंडिया) में लापसी घणी....
जीम्यां चूंट्या पूरवजां ने वीजो....
तोलड़ी री लापसी में अंतघणो....
सरवर जाइने चरूकर्‌या (हाथ धोये) वासो ने वसजो मरवे मोगरे।

दूसरे दिन सुबह धूप-ध्यान किया गया। नुगती-पूड़ी का भोजन बनाया गया। महिलाओं ने रातिजगे के गीत प्रारम्भ किये कि इतने में बावजी का पधारना हुआ। यह पदार्पण बड़ा आक्रोश लिये था। सारी धूप बिखेर दी। गेहूं के आखे कण-कण के कर दिये। खूब कोप किया। जीजां ने बड़ी हिम्मत रखी। कहा- 'बावजी इतना कोप मत करो। गोड़ला (माताजी) का शरीर बूढ़ा है। जो गलती हो फरमावो और माफ करो।' ऐसा कोप देख हम सब रोने लग गये।

मैंने नई धूप तैयार करवाई। भाई साहब की दी धूप बावजी ने स्वीकार नहीं की। जीजां ने पूछा तो बोले- 'यह घर में बड़ा है पर समझता ही नहीं है। मूरत बनवाकर लाया जिसे देखी तक नहीं।' जीजां ने मूरत देखी तो देवी की मूरत निकली। देवी खप्पर लिए हुए और पीछे सर्प बना दिया। मूरत होनी चाहिए थी पवन की। पवन के साथ सर्प की। बावजी पवन तथा सरप दोनों जूण में हैं।

बावजी पहले भी कई बार कोप कर चुके थे किन्तु ऐसा कोप कभी नहीं देखा गया। जीजां ने कहा- 'बावजी अपने भले हैं सो गलती बता दी। नहीं तो रातिजगा भी स्वीकार नहीं करते और जो जीमण बना उसे भी कण-कण का बिखेर देते तब रात तो अलग से फिर जगानी पड़ती ही, अभी जीमण दूसरा बनाना पड़ता, नहीं तो जीमने आने वालों को क्या खिलाते।'

हमने जब कानोड़ का पुश्तैनी मकान बेच दिया तो माताजी ने कहा कि बावजी को कानोड़ से नूतकर उदयपुर थापना कर देनी चाहिए। तब मैं व भाभीजी (डॉ. शांता भानावत) कानोड़ गये और नीचे वाले पक्के ओवरे में जहां कोने में सवा हाथ सम चौरस जगह छोड़कर चौंतरी (चबूतरी) बनी हुई थी, वहां हाथ जोड़कर विनती की, 'कानोड़ की यह जगह बेच दी है अत: आपको हम लेने आये हैं। आप पधारने की तैयारी कर लेना। हम दस बजे की बस से जायेंगे तब आपको हमारे साथ पधारना है।' बावजी वाले इस ओवरे में कभी कोई जापा नहीं हुआ। मौत-मरण पर कोई बैठक नहीं मंडी। माहवारी के दिनों में कोई औरत नहीं गई। सदैव इसकी पवित्रता बनी रही। उसे बेचे कई बरस हो गये मगर आज भी वह स्थान वैसा ही छूटा हुआ है।

कानोड़ से प्रस्थान करते समय हम पुन: बावजी के पास पहुंचे और अर्ज किया कि 'पधारो बावजी' और बस में बैठकर चले आये। बावजी कोई दृश्यवान तो हैं नहीं। बस में हम बावजी की ही बातें करते रहे। भाभीजी बोलीं कि कैसे पता चलेगा कि बावजी अपने साथ पधारे गये हैं। मैंने कहा कि उनका कोई न कोई संकेत होगा जिससे पता चल जायेगा या फिर जब भी पधारेंगे तब पूछ लेंगे।

उदयपुर बस से उतरकर ज्योंही हम घर पहुंचे और नाल चढ़ ही रहे थे कि ऊपर माताजी को बावजी पधारे और सबसे पहली बात यही कही कि इनके (भाभीजी के) मन में जो शंका थी वह नहीं रहनी चाहिए। मैं यहां आ गया हूं। उस दिन यह बात सुन हम सबको बड़ा सन्तोष हुआ कि बावजी अब हमारे साथ हैं।

आषाढ़ी पूर्णिमा तथा कार्तिक पूर्णिमा के दिन शुद्ध गोमूत्र, दूध, पानी, इत्र, पानी से स्नान करा कुंकम लगा पूरवजों का विधिपूर्वक धूप ध्यान अनुष्ठान कर उनका ओछाड़ बदला जाता है। पुराना ओछाड़ बहिन-बेटियों को कापड़े के रूप में दे दिया जाता है। जिन घरों में एक से अधिक पूरवज होते हैं वे घोड़ले को एक-एक कर आते हैं। ये पूरवज बारह तक होते हैं।

प्रारम्भ में पूरवजों के जो पांच गीत गाये जाते हैं। वे हैं-

(1) अळळ-खळळ तो नदियां व्हैवे, पूरवज धोवत्या धोवे ओ राज धोवत्या तो म्हारे (घर के एक-एक सदस्य का नाम जोड़ते) .... सा धोवे पूरवज पाट पधारे ओ राज।

(2) पूरवज आया म्हारी आलियां जी गलियां फूल बिखेरो चंपा कलियां जी पूरवज भलां ही पधारो

(3) म्हूं तो दीवो लेइने जोवूं आपरी वाट कुणी बाई मेली ओ दीवला वाट

(4) कुणी सा री राण्यां घी भरे (ऐसे ही पति-पत्नी का नाम ले गीत बढ़ाया जाता है।)

(5) पागां बांधी ने बायर आवो म्हारा पूरवज ढोल देवाडूं माणक चौक में

इसी प्रकार पूरवजों के झूलने का पालना लगाया है। बारी-बारी से सभी महिलाएं उन्हें हलरावण दुलरावण गा मचोला देती झुला रही हैं। ये गीत वस्तुत: पूरवजों की मनस्थिति तथा जीवनधर्मिता के असली दास्तान हैं। मेरी जीजां सोवनबाई (98) ने अपनी लड़की उमराव नलवाया (70) के साथ उन्हीं रागों में जब ये गीत सुनाये तो मैं चकित रह गया।

-डॉ. महेन्द्र भानावत

अखिल भारतीय सिविल सेवा लोन टेनिस प्रतियोगिता का आगाज

उदयपुर, 23 सितम्बर। जी-20 शेरपा बैठक, 9वे सीपीए सम्मेलन के बाद उदयपुर शहर एक और राष्ट्रीय स्तर के बड़े आयोजन का साक्षी बना। केंद्रीय सिविल सेवा सांस्कृतिक एवं क्रीड़ा बोर्ड नई दिल्ली तथा जिला प्रशासन उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय सिविल सेवा लोन टेनिस प्रतियोगिता का आगाज शनिवार को खेलगांव में हुआ। प्रतियोगिता में देश के 23 राज्यों से 300 से अधिक खिलाड़ी भाग ले रहे हैं।

उद्घाटन समारोह संभागीय आयुक्त राजेंद्र भट्ट के मुख्य आतिथ्य तथा पुलिस महानिरीक्षक अजयपाल लांबा की अध्यक्षता में हुआ। जिला कलक्टर अरविन्द पोसवाल, बिहार के सेकेट्री वेलफेयर दिवेश सहारा, निदेशक जनगणना व उदयपुर के पूर्व कलक्टर विष्णुचरण मलिक, आईएफएस जवाहर बाबू, प्रिसिंपल कमिश्नर सुधांशु झा, जिला पंचायत मुरैना के सीईओ इच्छित गढ़वाल बतौर विशिष्ट अतिथि मौजूद रहे। राजेंद्र भट्ट ने सभी खिलाड़ियों का स्वागत करते हुए कहा कि प्रतियोगिता को लेकर जिला प्रशासन ने हर संभव बेहतर व्यवस्थाओं के प्रयास किए हैं। इसके बाद भी किसी भी प्रकार की समस्या या कमी रहे तो मैं स्वयं और पूरी प्रशासनिक टीम हर समय उपलब्ध है। उदयपुर प्रशासन का यही प्रयास है कि आप सभी यहां आयोजित इस प्रतियोगिता की सुखद यादें लेकर जाएं। अजयपाल लांबा ने खिलाड़ियों को खेल भावना की शपथ दिलाई। जवाहर बाबू ने प्रतियोगिता के उद्घाटन की घोषणा की। प्रारंभ में आयोजन के नोडल प्रभारी व अतिरिक्त आबकारी आयुक्त ओपी बुनकर, सचिवालय खेल अधिकारी सुश्री मालती चौहान, गिर्वा एसडीएम प्रतिभा सिंह, जिला कलक्टर कार्यालय खेल प्रकोष्ठ प्रभारी सुरेंद्रसिंह चुण्डावत, मयंक माहेश्वरी ने अतिथियों का स्वागत किया। केंद्रीय सिविल सेवा सांस्कृतिक एवं क्रीड़ा बोर्ड नई दिल्ली से आए कन्वीनियर नवीनकुमार ने अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट किए। आभार गिर्वा एसडीएम आईएएस प्रतिभा सिंह ने व्यक्त किया।

33700 कृषकों को सब्जी बीज मिनिकिट वितरण

उदयपुर, 23 सितंबर। जिले के किसानों को परंपरागत फसलों के उत्पादन के साथ ही उन्हें सब्जी उत्पादन के लिए प्रेरित करने को लेकर उद्यान विभाग की ओर से मुख्यमंत्री बजट घोषणा के तहत राजस्थान उद्यानिकी विकास मिशन में रबी 2023-24 में जिले के 33700 कृषकों को सब्जियों के बीज मिनीकिट का नि:शुल्क वितरण किया जा रहा है।

उपनिदेशक उद्यान डॉ. एस. एल. जाट के बताया कि एकल सब्जी मिनीकिट में टमाटर, मटर, पत्ता गोभी, फूल गोभी, मूली तथा पालक के कुल 3700 एवं कॉम्बो किट के तहत कुल 30000 मिनी किट का वितरण किया जा रहा है। एकल सब्जी मिनीकिट में 500 वर्ग मीटर क्षेत्रफल के लिए टमाटर का 10 ग्राम, मटर 4000 ग्राम, पत्ता गोभी 25 ग्राम, फुलगोभी 35 ग्राम,, मूली का 300 ग्राम तथा पालक का 1500 ग्राम के मिनिकिट (इनमें से कोई एक) एवं 100 वर्ग मीटर क्षेत्र में कॉम्बो किट के तहत् एक कॉम्बो किट में पालक 60 ग्राम, गाजर 16 ग्राम, बेंगन 1 ग्राम, मटर 160 ग्राम तथा मूली 12 ग्राम का एक किट होगा। उपनिदेशक ने बताया कि योजना के तहत् ग्राम पंचायत स्तर पर चयनित किसान जिनके पास सिंचाई के पर्याप्त संसाधन हैं, उन्हें उद्यान एवं कृषि विभाग के समन्वय से राज किसान सत्यापन पोर्टल पर जनाधार कार्ड के आधार पर सब्जी बीज किट का वितरण किया जा रहा है। एक पात्र कृषक परिवार को एक सब्जी किट (एकल सब्जी किट अथवा कॉम्बो सब्जी किट में से एक) उपलब्ध कराया जा रहा है। अजा, अजजा, लघु, सीमान्त एवं महिला कृषकों को प्राथमिकता दी जा रही है। सब्जी लगाने के इच्छुक है कृषक स्थानीय कृषि पर्यवेक्षक अथवा सहायक कृषि अधिकारी से सम्पर्क कर सकता है। इससे पूर्व खरीफ 2023 में 23700 कृषकों को एकल एवं कोम्बो मिनी किट का वितरण किया गया है।

वरिष्ठ नागरिक तीर्थ यात्रा योजना उदयपुर संभाग के 335 यात्री जगन्नाथपुरी के लिए रवाना

उदयपुर, 23 सितंबर। मुख्यमंत्री बजट घोषणा के तहत देवस्थान विभाग की ओर से संचालित वरिष्ठ नागरिक तीर्थ यात्रा योजना में जगन्नाथपुरी के लिए ट्रेन 22 सितंबर को रवाना हुई। इसमें उदयपुर संभाग के 335 यात्री शामिल हैं।

सहायक आयुक्त देवस्थान विभाग उदयपुर जतीनकुमार गांधी ने बताया कि विशेष ट्रेन डूंगरपुर से रवाना होकर दोपहर 1 बजे राणा प्रतापनगर स्टेशन उदयपुर पहुंची। यहां से कुल 465 यात्री सवार हुए। इसमें उदयपुर संभाग के 335 यात्री एवं जोधपुर संभाग के 130 यात्री शामिल है। उदयपुर जिले के 207, चित्तौड़गढ़ के 72, राजसमंद के 31, प्रतापगढ़ के 25, बाड़मेर के 45, जालौर के 51, सिरोही के 32 एवं जोधपुर जिले के 2 यात्री सवार हुए। ट्रेन 24 सितम्बर को जगन्नाथ पुरी पहुंचेगी तथा 27 सितम्बर को पुनः उदयपुर लौटेगी। गांधी ने बताया कि यात्रियों की सहायता के लिए प्रत्येक कोच में दो राजकीय कार्मिकों को नियुक्त किया गया है। पूरी ट्रेन के एक राजपत्रित अधिकारी को प्रभारी नियुक्त किया गया। साथ ही यात्रियों की स्वास्थ्य जांच के लिए एक डॉक्टर एवं दो नर्सिंग कर्मचारी ट्रेन में उपलब्ध हैं।

SAI TIRUPATI UNIVERSITY, UDAIPUR

Approved by Section 2(f) of UGC Act 1956

Web: www.saitirupatiuniversity.ac.in | Email: info@saitirupatiuniversity.ac.in

PIMS PACIFIC INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES

HOSPITAL UMARDA

ADMISSION OPEN 2023-24

8209500035
9587890082

VENKTESHWAR INSTITUTE OF PARAMEDICAL SCIENCES

Approved by RPMC

- Diploma (2 Years)
- Radiation Technology
- Operation Theater Technology
- Medical Laboratory Technology
- ECG Technology
- Cath Lab Technology

VENKATESHWAR INSTITUTE OF PHARMACY

Approved by PCI

- D. Pharma (2 Years)
- B. Pharma (4 Years)

VENKTESHWAR COLLEGE OF PHYSIOTHERAPY

- B.P.T. (4.5 Years)
- M.P.T. (2 Years)

VENKTESHWAR INSTITUTE OF FASHION TECHNOLOGY & MASS COMMUNICATION

9672978017, 9588936922

- FASHION DESIGNING
- INTERIOR DESIGNING
- Diploma (1 Year)
- Adv. Diploma (2 Years)
- B.Voc (3 Years)
- M.Voc (2 Years)
- B.Des (4 Years)
- M.Des (2 Years)

- FINE ARTS
- BFA (4 Years)
- MFA (2 Years)

- JOURNALISM & MASS COMMUNICATION
- D-JMC (1 Years)
- BA-JMC (3 Years)
- MA-JMC (2 Years)

VENKTESHWAR SCHOOL OF NURSING

Approved by INC & RNC

- G.N.M. (3 Years)

VENKTESHWAR COLLEGE OF NURSING

Approved by INC & RNC

- M.Sc. Nursing (2 Years)
- Medical Surgical Nursing
- Child Health Nursing
- Obstertric & Gynaecological
- Community Health Nursing
- Mental Health Nursing
- B.Sc. Nursing (4 Years)

VENKTESHWAR INSTITUTE OF MANAGEMENT STUDIES

- MBA - Hospital Administration and Health Care Management

PACIFIC INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES

Approved & Recognized by NMC

- M.B.B.S. (4.5 Years + 1 Year Internship)
- MD/MS (3 Years)
- M.Sc. in Medical Sciences [Non-Clinical] (3 Years)

Umarda Railway Station Road, Udaipur

Contact: 0294 - 3510000, 8696440666

Web : www.pacificmedicalsciences.ac.in

श्राद्धपक्ष में बालिकाओं की सांझीकला

- डॉ. तुक्तक भानावत-

सांझी कुमारिकाओं का पन्द्रह दिवसीय श्राद्धशील व्रतानुष्ठान है। प्रतिदिन संध्या को बालिकाएं घर की मुख्य दीवार पर गोबर से इसका मंडन करती हैं। श्राद्धपक्ष में

प्रतिदिन संझ्या को पुरानी आकृतियां उखाड़कर नई आकृतियां उभारती हैं और उन्हें स्थानीय रंगबिरंगी फूलों की पंखुड़ियों से सजाती हैं। श्राद्ध के अंतिम दो दिन एक विशाल कोट के रूप में सांझी का मंडन स्थिर रहता है और अंतिम दिन पिछली सारी संज्याओं सहित कोट की सांझी मिलकार समूह रूप में सरोवर के जल में विशेष संस्कारपूर्वक विसर्जित की जाती है।

सांझी-कला कन्या-कलाओं की एक विशिष्ट पारंपरिक धरोहर है। इसका फैलाव राजस्थान से प्रारंभ होकर गुजरात, हरियाणा, दिल्ली, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र तक देखने को मिलता है। इसके विभिन्न नामों में संजा, सांझी, संध्या, सैझा, संझुली, सांझुलदे, सिंझा, सांझ्या नाम प्रमुखता से मिलते हैं। मेवाड़-मालवा में यह संज्या हंझ्या-हांजी के रूप में जानी जाती है। बुंदेलखंड में इसे मामूलिया, महाराष्ट्र में गुलाबाई तथा हरियाणा में धूंधा कहा जाता है।

संझ्या का व्रत कुमारिकाओं के अन्य व्रतों से सर्वथा भिन्न हैं। इसमें एकओर कलातत्वों का रंग-सौंदर्य मिलता है तो दूसरी ओर बालसुलभ संस्कृति का संस्कारित जीवन अभिव्यक्त होता है। गीतों के माध्यम से जहां भरपूर मनोविनोद होता है वहां अन्तर का उल्लास भी अपनी कोमलतम भावाभिव्यक्तियों को लेकर प्रस्फुटित होता है।

सांझी जब बनाई जाती है तो उसकी पूर्व तैयारी से लेकर अंतिम फलश्रुति तक में कन्याओं की सखी-सहेलियों, माताओं, बहनों अन्य परिजनों एवं पास-पड़ोस के लोगों का भी सहयोग रहता है। इससे यह लगता है कि हर घर परिवार की लड़की जो संझ्या बनाती है वह अपनी संझ्या को सर्वप्रकार से श्रेष्ठ बनाने के लिए कोई कसर बाकी नहीं रखती है और इस तरह संझ्या बनाने की मंगल होड़ भी चलती रहती है।

सांझी के उद्भव को लेकर डॉ. महेन्द्र भानावत ने बगड़ावत लोकगाथा में वर्णित कथा का उल्लेख करते हुए लिखा कि गाथानायक अजमेर के राजा बीसलदेव के भाई मांडलजी के पुत्र हरिजी के बाघजी नामक एक विचित्र पुत्र पैदा हुआ जिसका मुंह शेर का तथा धड़ मनुष्य का था। इसलिए उसे अलग से बाग में रखा गया और उसकी देखभाल का जिम्मा एक खोड्ये अर्थात लंगड़े ब्राह्मण कालू के सुपूर्द कर दिया गया।

एक दिन बाघजी ने कालू से कहा कि तुम कइयों के भविष्य-

कथन करते हो और विवाह के लग्न कराते हो तो मेरा भी भविष्य-कथन कर बताओ कि किस कन्या से मेरा विवाह होगा ? इस पर कालू ने कहा कि झूला झूलने जो लड़कियां आ रही हैं उनमें से जितनी आप अपनी बाथ में कैद कर सकें उन सबसे आप विवाह कर लेना।

बाघजी ने अपनी दोनों भुजाएं फैलाई तो उनमें तेरह लड़कियां आ समाईं। यह देख कालू ने मजाक में कहा कि मैंने आपके लगन निकाले तो दक्षिणा में मुझे भी कोई लड़की मिलनी चाहिए। बाघजी ने कहा कि इन तेरह में से जो तुझे अच्छी लगे उसे ले ले। उन लड़कियों में जो सबसे सुंदर लड़की कालू ने पसंद की उसका नाम संझ्या था। संझ्या संबंधी बालिकाएं जो गीत गाती हैं उसमें ''खुड़-खुड़ रे म्हारा खोड्या जमाई, थूं संज्या ने लेवण आयो रे'' पंक्ति इस तथ्य को उजागर करती है।

सांझी श्राद्ध पक्ष का त्यौहार है। लड़कियाँ प्रतिदिन संध्या को अपने घर के बाहर दरवाजे के एक ओर लाल मिट्टी की गोहली देकर उस पर गोबर की विभिन्न आकृतियाँ उकेरती हैं और उन्हें रंग-बिरंगे फूलों से सजाती हैं। यह सांझी प्रतिदिन नित नई मांडी जाती है।

राजस्थान में सभी जाति की लड़कियाँ सांझी बनाती हैं। गोहली भी अपनी-अपनी मरजी की चितराई रहती है। कभी चौखूंटी तो कभी अठखूंटी। कभी तिकोनी तो कभी तोरण शक्ल की तोरणी। आदिवासी बालिकाओं की सांझी की परिकल्पना अपने आदिमगंधी रूप लावण्य से सजी धजी पाई जाती है।

सांझी बनाने का कहीं कोई एक रूप नहीं मिला मगर पूरी संझ्या में जो आकृतियाँ बनाई जाती हैं, वे लगभग एक जैसी होती हैं। कहीं-कहीं जातीय और स्थानीय प्रभाव के कारण थोड़ा बहुत बदलाव भी देखने में आता है। मेरी अपनी ही बस्ती में तैली, हरिजन, ब्राह्मण, माली, गांछा, गमेती, राजपूत, अहीर आदि लड़कियों की जो संझ्याएं बनाई जाती हैं, उनका क्रम भी समान नहीं पाया गया। छोटे-छोटे गाँवों में अलबत्ता बहुत बदलाव नहीं होता। वहाँ लड़कियाँ पहले से ही सलाह मशवरा कर लेती है और उसी के अनुसार उस मोहल्ले में एक सी सांझी बनाने में लगी रहती हैं।

सांझी की जो क्रमवार आकृतियां उभारी जाती हैं वे प्रतिदिन की तिथि से पूर्णतया मेल खाती हुई लगती हैं। यह संगति जहां शाब्दिक रूप से अनुप्रासंगिक लगती है वहां अपने अंतर्गठन में भी यह पूर्णतया प्रासंगिक है। उदाहरण के लिये पाटला पूनम में प वर्ग की पुनरावृत्ति हुई है। इस दिन की बनने वाली सांझी भी इसी दिन की द्योतक है यथा- पांच हाथ, पांच पछेटे, पांच फूल। इसी प्रकार एकम को बनने वाली सांझी एकी (एक) संख्या लिये होती है। जैसे - एक डोली, एक थाल, एक कटोरा, एक ढाल, एक तलवार, एक बीजोरा आदि। यह क्रम सभी तिथियों की संझ्याओं में मिलता है।

बीज की साझीं में बीरन बेटी, बीजणी, बीजोरा, बछेरी के अंकन की प्रधानता मिलेगी। बीजोरा मिट्टी का बना गुम्बजनुमा ढक्कन होता है जो भीतर से पोला होता है। बीजणी हवा करने की पंखी को कहते हैं। बछेरी घोड़ी की बच्ची कहलाती है।

तीज की तिबारी तथा तीन संख्या में चाँद-सूरज-तारा बनाये जाते हैं। तराजू भी इसी दिन बनाई जाती है। तिबारी में तीन बारियां अर्थात् खिड़कियां होती हैं। इसमें संझ्याबाई को अपने भाई की प्रतीक्षा करते हुए दिखाया जाता है। तराजू समताभाव तथा नीर-क्षीर विवेक की प्रतीक है।

संझ्या के उद्भव के सम्बन्ध में सभी विद्धान एक मत हैं और राजस्थान से इसका प्रारम्भ हुआ मानते हैं। संझ्या के अंकनों में सर्वाधिक अंकन और रूपाकंन में जो सौन्दर्य परिनिष्ठित लगता है वह राजस्थान को रंगों का प्रदेश के रूप में ही स्थापित करता है।

सांझी के विविध अंकन अन्य प्रान्तों की संझ्याओं में भी समानधर्मी रूप लिए हैं। बोली अथवा भाषा तथा आंचालिक परिवेश का प्रभाव तो राजस्थान में भी अलग-अलग अंचलों में देखने को मिलता है। अन्य प्रान्तों में तिथि के क्रम के अनुसार सांझी के रूप समानधर्मी नहीं हैं। ऐसा लगता है कि राजस्थान से जो बालिकाएं विवाह के बाद अन्य प्रान्तों में चली गई उन्होंने सांझी व्रत को तो आस्थामूलक उकेरण दिया किन्तु तिथियों का क्रम सिलसिलेवार नहीं रखा।

अधिक खोजबीन से यह भी पता चला कि बालिका के ससुराल में रहने के कारण श्राद्धपक्षीय सांझी के मण्डन में भी कई कारणों से टूटन आने लगी फलस्वरूप पन्द्रह दिन की संझ्या कहीं पांच दिन तो कहीं आठ, कहीं नौ तो कहीं ग्यारह दिन ही बनकर सीमित रह गई। ऐसे ही अन्तिम दिन बनाये जाने वाले कोट अथवा किलाकोट की स्थिति रही।

जो भी हो, संझ्या के अंकन वे ही मिलते हैं जो रोजमर्रा के जीवन में देखे जाते हैं। सूरज चांद के अंकन प्राय: सभी संझ्याओं में मिलते हैं। अलग-अलग जाति में व्यवसाय के अनुसार जो उपादान मिलते हैं उनका संझ्या में प्रमुखता के साथ उपयोग देखने को मिलता है। उदाहरण के लिए माली जाति द्वारा बनाई गई संझ्या में माला, केल, पत्ता, छाबड़ी, सुई-धागा, विविध पंखुड़ी फूल तथा कलियां, गाड़ोलियां लोहारों की संझ्या में गाड़ा-गाड़ी बैल तथा लोहे के विभिन्न औजारों की प्रमुखता। नगारचियों में ढोल, नगाड़े। हलवाइयों की संझ्या में विविध भांति की मिठाइयों के अंकन तथा आदिवासियों की सांझी में विविध वृक्ष, उनके फल-फूल, भांति-भांति के पशु-पक्षी देखने को मिलेंगे जबकि ब्राह्मणों की संझ्या में जनेऊ, पूजा-पाठ की सामग्री का दर्शाव अधिकता लिए होगा।

इन सांझियों में मानवाकृतियों के प्रतीक भी आंचलिक बोध के प्रभाव से अछूते नहीं हैं। ये सब प्रतीक और सांझी सम्बन्धी गीतों में जो आंचलिक शब्दावली देखने को मिलती है उसके आधार पर किसी समाज एवं जाति विशेष के जीवन परिवेश, संस्कार, सोपान, त्यौहार एवं उत्सवधर्मिता तथा रहन-सहन, खान-पान, पहनावा, परिधान, आनुष्ठानिक रचाव जैसे अनेक रूपों का बारीकी से शोधान्वेषण किया जा सकता है।

देखना यह भी होगा कि घर की मुख्य दीवार पर गोबर की जो आकृतियाँ उभारी जाकर विविध फूलों से श्रृंगारी जाती हैं तब सहसा ही हमारा ध्यान कृषि प्रधान ग्रामीणवेशी भारत की प्रमुख धनधान्य संस्कृति की और जाता है। यह भी कि भारत की पहचान देता उसका राष्ट्र गीत है, राष्ट्र ध्वज है, राष्ट्रीय पक्षी और राष्ट्रीयता की पहचान देते और भी ऐसे प्रमुख चिन्ह हैं। इन सबके मूल में राष्ट्र धन गोबर सबका मेरूदण्ड बना हुआ है।

बगड़ावत माहगाथा में ही फूलों का एक अच्छा सन्दर्भ आता है जिसमें कहा गया है कि सर्वश्रेष्ठ फूल कौनसा है। उत्तर में उस फूल का आशय गाय है जिसका बैल पूरी कृषि का मुख्य है। सर्वश्रेष्ठ फूल घोड़ी है जिसकी शक्ति पर राज्य टिके हुए हैं। सर्वश्रेष्ठ फूल सूरज है जिसके उदय होते ही समस्त चराचर जगत कर्मण्य बनता है। ऐसे ही कपास है जो पूरे मानव समुदाय का परिधान बनता है और सबसे आल्हा फूल बरसात है जिसके रहते सारे कुफूल फूल हुए लगते हैं।

आज के सन्दर्भ में सबसे बड़ा फूल शिक्षा है जो मनुष्य को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाता है लेकिन इससे भी बड़ा फूल वह बिटिया है जो सारी मानवता का मूल्यवान आंगन बनकर गृहस्थ जीवन की सुख छांह में युग-युगीन वंशधारियों की जननी बनने का मातृत्व सुख लेती है।

जो पार्टी मांग पूरी करेगी, उन्हें समर्थन देंगे : सलाड़िया

उदयपुर, 23 सितंबर। श्री राजपूत करणी सेना के 17वें स्थापना दिवस उपलक्ष्य में गांधी ग्राउंड में शनिवार को न्यायाधिकार महासभा

का आयोजन हुआ। जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया। सेना पदाधिकारियों ने राज्य सरकार से 17 सूत्री मांगों को पूरा करने की मांग उठाई।

महासभा प्रदेशाध्यक्ष भंवरसिंह सलाड़िया ने कहा कि जो भी राजनैतिक पार्टी हमारी मांगों को पूरा करेगी, हम उन्हें पूरा समर्थन करेंगे। अगर कोई सरकार हमारी मांगों को नहीं मानती है तो हम सत्ता का परिवर्तन करने का प्रयास करेंगे। सलाड़िया ने समाज में एकजुटता का संदेश भी दिया। दोपहर 12 बजे हनुमान चालीसा पाठ के साथ महासभा शुरू हुई। इस मौके पर सेना के राष्ट्रीय कार्यकारिणी अध्यक्ष विश्वबंधुसिंह राठौड़, बिहार के पूर्व सांसद आनंदमोहन सिंह, राजऋषि समताराम महाराज, उदयपुर जिला अध्यक्ष प्रवीणसिंह झाला सहित बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, सिरोही आदि जिलों के अध्यक्ष शामिल हुए।

ये थी प्रमुख मांगे

करणी सेना की 17 सूत्रीय मांगों में प्रमुख रूप से क्षत्रिय कल्याण बोर्ड का गठन करने, ईडब्ल्यूएस आरक्षण को 10 से बढ़ाकर 14 प्रतिशत करने, महाराणा प्रताप की जयंती पर राष्ट्रीय अवकाश घोषित करने संबंधी मांगे थी।

मेघवाल की पुस्तक राजस्थान के प्रचलित हस्तशिल्प का लोकार्पण

उदयपुर, 23 सितंबर। गणेश चतुर्थी के शुभ अवसर पर

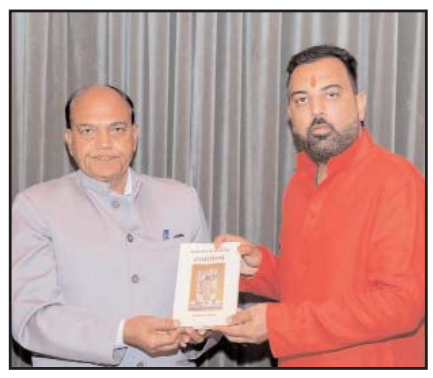

लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के पूर्व संयुक्त निदेशक पन्नालाल मेघवाल की हाल ही प्रकाशित राजस्थान के प्रचलित हस्तशिल्प पुस्तक का लोकार्पण किया।

लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने लेखक पन्नालाल मेघवाल के कला, संस्कृति एवं विरासत लेखन कार्य की सराहना की। उन्होंने कहा कि वे स्वयं कला, संस्कृति एवं विरासत संरक्षण एवं संवर्धन के हिमायती हैं। उन्होंने कहा कि मुझे यह जानकर कर प्रसन्नता हुई कि लेखक ने कला संस्कृति एवं विरासत पर 15 पुस्तकें लिखीं हैं। उनके 750 से अधिक आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। लेखक मेघवाल ने बताया कि राजस्थान में हस्तशिल्प कार्य पीढ़ी दर पीढ़ी परंपरागत रूप से किया जाता रहा है, लेकिन अब इन कलाओं के प्रति युवाओं का रुझान कम हुआ है। परिणाम स्वरूप हस्त कलाएं विलुप्त हो रही हैं। ऐसी विलुप्त हो रही हस्त कलाओं के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए पुस्तक का लेखन किया है।

मेघवाल ने बताया कि उन्होंने राजस्थान के प्रचलित हस्तशिल्प पुस्तक में लुप्त हो रही खराद, कावड़, फड़, पिछवाई, थेवा, मोलेला, मूर्तिकला, सालावास दरी, काष्ठ कला आदि 41 हस्तशिल्प कलाओं का समावेश किया है। यह पुस्तक कलाप्रेमियों एवं प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले परीक्षार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी है। मेघवाल ने लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ को उनकी दस पुस्तकों का सेट भी भेंट किया। इस अवसर पर इवेंट मेकर्स के डायरेक्टर पीयूष मेघवाल, एडवोकेट तेजेंद्र मेघवाल, मिर्जा अबरार बेग एवं अमरीश पालीवाल उपस्थित थे।

ARCHI
Creating Signature Address
Since 1998

27 Projects | 4000 Happy Faces | 23 years of Legacy | 25 Lac sq.ft. Space Delivered | 8 Ongoing Projects

Pearl Paradise

3 & 4 BHK
Luxury Apartments
- Rera No.: RAJ/P/2020/1233
- Meera Nagar, Shobhagpura
Mikado School Rd.
Udaipur (Raj.)

The Harmony
AN URBAN LIVING

3 & 4 BHK
Signature Apartments
- Rera No.: RAJ/P/2021/1500
- RK Circle - Shobhagpura Road
Opp Coffee Culture.
Udaipur (Raj.)

PEACE PARK
feel the peace.....

2/3/4 BHK
Premium Apartments
- Rera No.:
Phase 1 - RAJ/P/2019/1027
Phase 2 - RAJ/P/2019/1028
- 1-New Vidhya Nagar
Hiran Magri, Sec. 4, Udaipur (Raj.)

Royal City
आपका घर - आपके बजट मे

1/2/3 BHK
Apartments
- Rera No.: RAJ/P/2018/625
- Airport Rd, Pratapnagar,
Opp Hotel Valley View
Udaipur (Raj.)

ARCADE

2/3/4 BHK
Premium Apartments
- Rera No.-RAJ/P/2019/964
- New Bhopalpura, Behind Laxman Vatika
Udaipur , (Raj.)

LOVENEST

2 & 3 BHK
Apartments
- Rera No.: RAJ/P/2019/1156
- Rajeshwari Resort - Geetanjali Road
Manwakheda, Udaipur (Raj.)

ARCHI GROUP OF BUILDERS
Ground Floor, Archi Arihant Building, 100 ft. Road, Nr. JK Paras, Sobhagpura Circle, Udaipur - 313001 | Ph.: +91 94141 55525, +91 750 650 4498 | Web: archigroup.in

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

गांधी जी की अमूल्य विरासत को संरक्षित करती

राजस्थान सरकार

• गांधी वाटिका •

का लोकार्पण द्वारा

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे माननीय नेता प्रतिपक्ष, राज्यसभा

श्री राहुल गांधी माननीय सांसद, लोकसभा

श्री अशोक गहलोत माननीय मुख्यमंत्री, राजस्थान

दिनांक: 23 सितंबर, 2023 समय: सायं 4:00 बजे
स्थान: गांधी वाटिका, सेन्ट्रल पार्क, टोंक रोड, जयपुर

विशेषताएं –

- गांधी वाटिका का निर्माण 2021-22 बजट घोषणा के अनुरूप किया गया है।
- 14500 वर्गमीटर क्षेत्र में 85 करोड़ रुपये की लागत से निर्माण करवाया गया है।
- यह देश का पहला म्यूजियम है, "गांधी वाटिका", जहां होलोग्राफिक टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल से गांधीजी की तस्वीरें बोलती हैं और जहां इतिहास आपके साथ चलने लगता है ।
- यह नई पीढ़ी को गांधी जी के दर्शन व शिक्षा से प्रेरित करेगी।

राजस्थान देश का एकमात्र राज्य है जहां शांति एवं अहिंसा विभाग बनाया गया है एवं गांधी दर्शन शिविरों के माध्यम से गांधीजी की विचारधारा को हर गांव-गांव तक पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को जानने के लिए गांधी वाटिका म्यूजियम एक नया माध्यम बनेगा।

– अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

राष्ट्रपिता का दर्शन व विचार
प्रसारित करती प्रदेश सरकार

LIVE प्रसारण देखने के लिए

लॉग ऑन करें –
@AshokGehlot.Rajasthan

या स्कैन करें

राजस्थान संवाद

जयपुर विकास प्राधिकरण
इंदिरा सर्किल, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर - 302004

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित।
सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।